ॐ

~~~~~~~~

विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय-हिन्दी

दिनांक-01/06/2020 क्षितिज-गद्य-खंड

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

सुप्रभात बच्चों! आपका दिन मंगलमय हो !

दु:ख जीवन को माँजता है, उसे आगे बढ़ने का हुनर सिखाता है। वह हमारे जीवन में ग्रहण लाता है, ताकि हम पूरे प्रकाश की अहमियत जान सकें और रोशनी को बचाए रखने के लिए जतन करें ।इस जतन से सभ्यता और संस्कृति का निर्माण होता है ।आज वैश्विक महामारी के कारण पूरा विश्व आहत है, परंतु कहीं -न -कहीं इस
~~~~~~~~

महामारी ने प्रकृति को कुछ वरदान स्वरुप दिया अवश्य है ।हमें, नकारात्मक सोच को दूर कर सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना चाहिए क्योंकि सकारात्मक सोच ही हमें सफलता दिलाती है ।

कल की कक्षा में आपने पढ़ा कि लेखक राहुल सांकृत्यायन सुमति ,जो एक मंगोल भिक्षुक है ,के साथ- साथ चल रहे हैं और जहां भी वह जाता है ,लेखक उनके साथ चलते हैं। जब किसी गाँव में ठहरना होता है ,तो उनको चाय-नाश्ता भी मिल जाता है, क्योंकि सुमति उस गांव का यजमान होता है ।आज की कक्षा को इस प्रकार जोड़ते हुए आगे बढ़ते हैं..

ल्हासा की ओर

--राहुल सांस्कृत्यायन

अब हम तिङ्री के विशाल मैदान में थे ,जो पहाड़ों से घिरा मालूम होता था ,जिसमें दूर एक छोटी-सी पहाड़ी मैदान के भीतर दिखाई पड़ती है । उसी पहाड़ी का नाम है

तिड्री -समाधि- गिरी ।आसपास के गांव में भी सुमति के कितने ही यजमान थे ,कपड़े की पतली- पतली चिरी बत्तियों के गंदे खतम नहीं हो सकते थे, क्योंकि बोधगया से लाए कपड़े के खतम हो जाने पर किसी कपड़े से बोधगया का गंडा बना लेते थे ।वह अपने यजमानों के पास जाना चाहते थे ।मैंने सोचा, यह तो हफ्ता- भर उधर ही लगा देंगे। मैंने उनसे कहा जिस गाँव में ठहरना हो, उसमें भले ही गंडे बाँट दो मगर आसपास के गाँवों में मत जाओ; उसके लिए मैं तुम्हें ल्हासा पहुँचकर रुपये दे दूँगा । सुमति ने स्वीकार किया। दूसरे दिन हमने भरिया ढूँढ़ने की कोशिश की, लेकिन कोई न मिला। सवेरे ही चल दिए होते तो अच्छा था ,लेकिन अब 10-11 बजे की तेज धूप में चलना पड़ रहा था। तिब्बत की धूप भी बहुत कड़ी मालूम होती है ,यद्यपि थोड़े से भी मोटे कपड़े से सिर को ढाँक लाएँ तो गर्मी खतम हो जाती है ।आप 2 बजे सूरज की ओर मुँह करके चल रहे हैं, ललाट धूप से जल रहा है और पीछे का कंधा बरफ़ हो रहा है।

ध्यातव्य --आपने देखा कि लेखक सुमति के साथ जब तिब्बत की यात्रा में आगे बढ़ते जा रहे हैं, तो इस यात्रा के मार्ग में उन्हें बहुत सारे ऐसे गाँव मिलते हैं, जहाँ सुमति सबको बोधगया से लाया हुआ गंडा दे रहे थे। गंडा , अर्थात लाल कपड़े का चिरा हुआ टुकड़ा , जिसे वहाँ के लोग बड़े ही विश्वास एवं सम्मान के साथ लेते थे। जब गंडे समाप्त हो जाते थे तो सुमति वहीं के कपड़े मिलाकर अपने यजमानों को दे दिया करता था।लेखक ने सुमति से गंडे अन्य गाँव में न बाँटने का आग्रह करते हुए कहा कि आपको गंडे बाँटने से जो प्राप्त होता है उसके बदले मैं दे दूँगा ।आप जिस गाँव में रुकें, उसी गाँव में गंडे बाँटे ।सुमति भी मान जाता है। दूसरे दिन लेखक ने सामान ढोने वाला आदमी खोजा लेकिन उन्हें कोई नहीं मिला, तो स्वयं ही लेखक और सुमति चल दिए तिब्बत की यात्रा के लिए। काफी तेज धूप थी लेकिन लेखक का कहना है कि इस देश में थोड़ा मोटा कपड़ा से सर ढँक

लिया जाता है, तो गर्मी महसूस नहीं होती है। आज के लिए इतना ही,शेष अगली कक्षा में।